RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-01
January -2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

वेदों का महत्व

अर्पिता सिंह

शोध छात्रा, संस्कृत विभाग वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर

भूमिका–

साहित्य के रूप में सम्पूर्ण वेद वाङ्मय महत्वपूर्ण है। आवश्यकतानुसार वेद का साहित्य बढ़ता गया और ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् साहित्य क्रमशः विकसित हुए।

प्राचीन काल से लेकर आज तक वेद–वाङ्मय सम्पूर्ण विश्व को विविध उपेदश देता रहा है। इसलिए इसके महत्व को वर्णित करना प्रासंगिक है।

मनु के कथनानुसार वेद पितृगण, देवता तथा मनुष्यों का सनातन, सर्वदा विद्यमान रहने वाला चक्षु है। लौकिक वस्तुओं के साक्षात्कार के लिए जिस प्रकार नेत्र की आवश्यकता होती है उसी प्रकार अलौकिक तत्वों के रहस्य को जानने के लिए वेद की उपादेयता है। मनु के अनुसार तीनों कालों में इनका उपयोग है और सब वेद से प्राप्त होता है।

''भूतं भव्यं भविष्यं च सर्व वेदात् प्रसिध्यति।''

वेदों का महत्व–

भारतीय मान्यता के अनुसार वेद ब्रह्म विद्या के ग्रन्थ भाग नही, स्वयं ब्रह्म है। वेद अनन्त हैं– 'अनन्ता वै वेदाः।'

भगवान वेदव्यास जी ने वेद के चार विभाग किये जो ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, तथा अथर्ववेद के नाम से लोक में प्रकट है।

स्मृतिकार याज्ञवल्क्य मुनि– वेद के महत्व का निरूपण करके शब्द और अर्थ का भी वेद मूल तत्व प्रतिपादित करते हैं।

''प्रत्यक्ष और अनुमान आदि प्रमाणों के सहारे जिस पदार्थ का बोध नही किया जा सकता है, वेद उसका बोध कराता है और वेद का वेदत्व इसी में है।''

वेद भाष्यकर्त्ता सायणाचार्य का कथन है कि जो ग्रन्थ अनिष्ठ परिहार पूर्वक इष्ट प्राप्ति के अलौकिक उपाय का प्रदर्शन करता है, वही वेद है।

इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं
यो ग्रन्थों वेदयति स वेदः।
(सायणाचार्य। तै0 सं0 भा0 भू0)

मीमांसाशास्त्र के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् आचार्य खण्ड देव के अनुसार वेद वह धर्म है जो शब्दनिष्ठ और अर्थनिष्ठ हो। केवल शब्दनिष्ठ धर्म वेद नहीं हो सकता।

वेदत्वं नाम धर्मः शब्दार्थोभयनिष्ठः न तु केवलशब्दनिष्ठः।

वेद वे है जिनके द्वारा सारी सत्य विद्याएँ जानी या प्राप्त की जाती है।

सायणाचार्य के अनुसार,

''विदन्ति जानन्ति, विद्यन्ते भवन्ति, विन्दन्ति विचारयन्ति सर्व मनुष्याः सत्यविद्यां ये येषु वा तथा विद्वांसश्च भवन्ति ते वेदाः।''

अन्य विद्वानों के अनुसार वेद वह है जिसके द्वारा धर्मादि पुरूषार्थ जाने जाते है।

विद्यन्ते ज्ञायन्ते लभ्यन्ते वा धर्मादिपुरूषार्था एभिरिति
वेदाः।।

कुछ मनीषियों ने वेद का वेदत्व इसी तथ्य में माना है कि वह प्रत्यक्ष या अनुमान के द्वारा

दुर्बोध तथा अज्ञेय उपाय का ज्ञान स्वयं कराता है।

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते एवं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता।

वास्तव में वेद उस कल्पवृक्ष के समान है जो मनुष्य को मुँह माँगा पदार्थ प्रदान करता है। ''जाकी रही भावना जैसी'' के अनुसार जिसने जिस दृष्टि से वेदों का मंथन किया वेद ने उसे खाली हाथ नही लौटने दिया। यही कारण है अत्यन्त प्राचीन काल से लेकर आज तक के वेदों के विषय में अनेक दृष्टियों से विचार किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप वेदों की अनेक प्रकार की व्याख्या पद्धतियाँ मिलती है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वेद ज्ञान के वे अक्षय कोष है जिनमें सभी विषयों का समावेश है। वेदज्ञ की प्रशंसा में मनु की यह उक्ति बड़ी मार्मिक है – ''वेदशास्त्र के तत्वों को जानने वाला व्यक्ति जिस किसी आश्रम में निवास करता हुआ कार्य का सम्पादन करता है, वह इसी लोक में रहते भी ब्रह्म का साक्षात्कार करता है –

वेदशास्त्रर्थतत्त्वज्ञो यत्र कुत्राश्रमे वसन्
इहैव लोके तिष्ठान् स ब्रह्मभूयाय कल्पते।
– मनुस्मृति /12/102

RRIJM 2015, All Rights Reserved

निष्कर्ष –

इस प्रकार हम देखते है कि जब वेदों का इतना महत्व प्राप्त है तब इनका अनुशीलन प्रत्येक भारतीय का आवश्यक कर्तब्य होना चाहिए। अतः उचित तो यह था कि अन्य ग्रन्थों के अध्ययन की अपेक्षा हम वेदानुशीलन का महत्व, वैदिक धर्म तथा भारतीय संस्कृति के विशुद्ध रूप को समझने के लिए वेद के तत्वों के अध्ययन में समय बिताते। इनकी जितनी श्लाघा की जाय, थोड़ी है, जितनी भी प्रशंसा की जाय वह न्यून ही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मनुस्मृति – मनु विरचित
2. याज्ञवल्क्यस्मृति – याज्ञवल्क्यमुनि
3. ऋग्वेदभाष्यभूमिका – सायणाचार्य रचित
4. तैतीरिय संहिता
5. भगवान वेदव्यास

RRIJM 2015, All Rights Reserved